© 2017 IJSRST | Volume 2 | Issue 4 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

वर्तमान समय में शिक्षा – शिक्षण में शिक्षक का दायित्व

Dheerendra Kumar Singh
यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

हमारे समाज में और एक बच्चे के जीवन में एक शिक्षक का स्थान माता–पिता के बाद, लेकिन ईश्वर से पहले आता है। शिक्षकों के ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोपना है, जिससे उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि हो। शिक्षक की कोशिश होनी चाहिए कि बच्चों में आत्मविश्वास पैदा हो, छात्र कल्पनाशील व सृजनशील बने। सृजनशील व कल्पनाशील छात्र सर्वोत्तम छात्रों में गिने जाते है। वे छात्र, जो शिक्षकों को आकर्षित करते है, सर्वोत्तम परिणाम देने वाले होते है। इसके विपरीत शिक्षक उन विद्यार्थियों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करे जो पढ़ने में कमजोर है तथा उनमें बेहतर समझदारी एवं सीखने की प्रवृत्ति विकसित कर सके।

बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षक को बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है। शिक्षक ही वास्तव में बालक का समुचित शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास कर सकता है। विद्यालय–प्रांगण में भी शिक्षक को अति महत्वपूर्ण भूमिका निभारी पड़ती है। सम्पूर्ण विद्यालय में शिक्षक विभिन्न प्रकार की योजनाओं को बड़ी व्यवहारिक रूप से सम्पूर्ण करता है। अच्छी से अच्छी शिक्षण पद्धति प्रभावरहित हो जाती है, यदि शिक्षक उसे सही ढंग से प्रयोग न करें। जिस प्रकार विद्यालय जीवन में प्रधानाध्यापक मस्तिष्क के रूप में होता है, शिक्षक आत्मस्वरूप होता है। आत्मा के बिना शरीर (विद्यालय) निर्जीव होता है। शिक्षक ही विद्यालय जीवन का गतिदाता है।

उपर्युक्त कथन में स्पष्ट हो जाता है कि विद्यालय जीवन में शिक्षक को अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और उसके उत्तरदायित्व भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षक का दायित्व मात्र विद्यालय में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज में होता है और उसे अति महत्वपूर्ण एवं सम्मानप्रद स्थान प्राप्त है।

''वास्तव में शिक्षक हमारे भाग्य निर्माता है। समाज उनकी उपेक्षा से ही अपना विनाश करता है।'' .....
डॉ0 जाकिर हुसैन

''शिक्षक राष्ट्र के भाग्य–निर्णायक होते है। वे ही पुर्ननिर्माण की कुंजी है।''

.....प्रो0 हुमायूँ कबीर

अध्यापक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान है। कहा जाता है कि–

''एक आदमी हत्या करके एक ही जीवन का अन्त करता है, किन्तु शिक्षक गलत शिक्षा देकर सम्पूर्ण परिवार की हत्या करते है।''

इसलिये हम कह सकते है कि शिक्षक सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रगति के आधार होते है। समय के साथ–साथ नए–नए प्रयोगों और दृष्टिकोणों ने हर व्यवसाय एवं पद स्वरूप को बदल दिया। अब कोई भी कार्य अपने प्राचीन

तौर–तरीकों से करना असम्भव सा हो गया है। जब ऐसा परिवर्तन समाज में आता है, तब समाज में शिक्षित, सुशिक्षित वर्ग का दायित्व और बढ़ जाता है। दायित्वों का भार उसे अधिक संयमित होकर निभाना पड़ता है। यह बात शिक्षक वर्ग पर अधिक लागू होती है। समाज का निर्माता, राष्ट्र का माग्र दर्शक स्वस्थ परम्पराओं के नियामक शिक्षक को और भी अधिक सावधान होने की जरूरत पड़ती है।

प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य ''सा विद्या या विमुक्तये'' रहा अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति दिलाये। आज शिक्षा का उद्देश्य ''सा विद्या या नियुक्तये'' हो गया है अर्थात विद्या वही है, जो नियुक्ति दिलाये। इस दृष्टि से शिक्षा के बदलते अर्थ से समाज की मानसिकता को बदल दिया है। यही कारण है कि आज समाज में लोग केवल शिक्षित होना चाहते है। सुनिश्चित नहीं बनना चाहते है। वें चाहते है कि ज्ञान की सीधा सम्बन्ध उनके अर्थोपाज्रन से ही है। जिस ज्ञान से अधिक धन और उच्च पर को ग्रहण किया जाये वहीं शिक्षा है, ऐसा आज की नयी पीढ़ी की विधारधारा है।

शिक्षक का कर्तव्य छात्रों को केवल शिक्षित करना ही नहीं है अपितु उन्हें संस्कारी भी बनाना हैं उनके अन्दर शब्द ज्ञान ही नहीं भरना है बल्कि उसे नैतिकता, कर्तव्य–परायणता, सजगता का पाठ पढ़ाना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। यदि अध्यापक यह कार्य नहीं करता तो वह सच्चे अर्थों में अध्यापक कहलाने योग्य नहीं है। अध्यापक का कार्य केवल पाठ पढ़ाना ही नहीं होता है, अपितु पाठ को पढ़कर या पढ़ाकर उसमें आयी उद्देश्यात्मकता, नैतिकता आदि को समझना– सिखाना भी उसी का कर्तव्य होता है। पाठ को पढ़कर समझने की सार्थकता तभी है जब उस ज्ञान को व्यवहार में भी लेकर आया जाय। बच्चें अपने प्रथम गुरू अर्थात् अभिभावकों से ही सच बोलना सीखते है। जब वे छोटी–छोटी बात पर माता–पिता को झूठ बोलते देखते है, तो स्वतः ही वे झूठ बोलने लग जाते है। गॉधी जी ने ''सत्य के प्रयोग'' पुस्तक में सही बताया है कि ''जो कार्य हम स्वयं करते है, उस कार्य को बच्चों को करने से मना कैसे कर सकते है। बच्चों पर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।'' शिक्षक का कर्तव्य बन जाता है कि अपने बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित न रखे। पुस्तकीय ज्ञान तो मात्र परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन होता है। अंकों को पाने का एक उपक्रम होता है। लेकिन विभिन्न चीजों से जोड़कर हम उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते है। उन्हें अच्छा नागरिक और समाज दर्शक बनाकर समाज की छोटी से छोटी चीज से जोड़े। उन्हें हर उस बात, घटना, विचार, भावना को समझाये जिससे उन्हें अपने परिवेश और समाज से जुड़ने और समझने में मदद मिले।

01. छात्रों का शैक्षिक एवं चारित्रिक विकास करना–

एक आदर्श शिक्षक में उच्च चारित्रिक गुणों का होना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षक का उच्च चरित्र की बालकों में उच्च चरित्र का विकास कर सकता है। उच्च चरित्रिक गुणों के लिये अध्यापक में उदारता, ईमानदारी, निष्पक्षता, नैतिक चरित्र, आत्मविश्वास, न्यायप्रियता आदि मानवीय गुणों का होना आवश्यक है। यदि शिक्षक उपर्युक्त गुणों से युक्त है, तो वह अपने छात्रों में भी ऐसे ही गुणों का विकास करेगा और समाज में निष्पक्ष नैतिकता का प्रसार करने के लिये प्रोत्साहित करेगा। एक चरित्रवान शिक्षक एक आदर्श शिक्षक होता है और वह विद्यालय में एक मिसाल कायम करता है।

02. **कक्षा का प्रबन्ध एवं समुचित, शिक्षण देनाः–**

शिक्षक को कक्षा–कक्षों के भौतिक वातावरण को उत्तम बनाने का भी प्रयास करना चाहिये। शिक्षक को कक्षा के फर्नीचर, श्यामपट्ट, चाक–डस्टर आदि की व्यवस्था या कमियों के विषय में प्राचार्य को सूचित करते रहना चाहिये। कक्षा–कक्षों में हवा व प्रकाश का उचित प्रबन्ध हो। शिक्षक को कक्षा–प्रबन्धन में छात्रों की सहायता लेना चाहिये। छात्रों के गृह कार्य सम्बन्धी पुस्तिकाओं, प्रगति पत्रिकाओं उपस्थिति पंजिका आदि को सुरक्षित एवं व्यवस्थित ढ़ग से रखने का प्रयास करना चाहिये। शिक्षक का मुख्य दायित्व कक्षा को नियमबद्ध तरीके से संचालित करना है। कक्षा में यदि शोरगुल अधिक होगा और बच्चे समय से उपस्थित नहीं होगें तो शिक्षा का स्तर गिरने लगेगा।

03.**छात्रों के कार्यों का मूल्यांकन करनाः–**

मूल्यांकन से छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का पता चलता है। परीक्षा प्रभारी शिक्षक होता है, जो आन्तरिक और बाहय परीक्षाओं की व्यवस्था करता है और उपलब्धियों का मूल्यांकन करता है। शिक्षक ही प्रश्न–पत्रों की रचना करते हैं छात्रों की उत्तर–पुस्तिकाएँ जॉचते है और परीक्षाफल तैयार करते है।